L. N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - III
PAPER - III
Psychology (Honours)
TOPIC - Watsonian Behaviourism as a system.

Dr. Premnath Kumar Sahu,
Assistant Professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College, Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
Premnath Kumar 2018
@gmail.com,

वाटसन ने 1913 में नये जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय (John Hopkins University) में व्यवहारवाद की संस्थापना की, उस समय में वे उस विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे, उस सम्प्रदाय की स्थापना संरचनावाद (Structuralism) तथा प्रकार्यवाद (Functionalism) के विरोध में हुआ। मनोविज्ञान की यह स्कूल काफी प्रचलित रहा और अपनी इस प्रचलता के कारण ही इसे मनोविज्ञान में द्वितीय बल (Second Force) के रूप में भी जाना जाता है प्रथम बल (First Force) मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) का इसी नाम है।

वाटसन के व्यवहारवाद के दो उपसम्प्रदाय है। प्राथमिक (Primary) तथा द्वितीयक (Secondary) वाटसन के प्राथमिक व्यवहारवाद के दो मुख्य पहलू है। धनात्मक पक्ष (Positive aspect) तथा नकारात्मक पहलू (Negative aspect) वाटसन के धनात्मक पहलू में वस्तुनिष्ठ मनोविज्ञान (Objective Psychology) पर बल डाला गया है, वे पशु मनोविज्ञान की प्रविधियों एवं विधियों को मानव मनोविज्ञान पर लागू करना चाहते थे, उनके लिए व्यवहार का अध्ययन ही चेतना के अध्ययन मनोवैज्ञानिकों के लिए वैज्ञानिक कसौटी के मुख्य स्रोत है। व्यवहारवाद के इस पहलू को आनुभाविक व्यवहारवाद या कार्य-विधि व्यवहारवाद कहा गया, वाटसन के व्यवहारवाद का नकारात्मक पहलू हिचनर तथा कण्ट के अन्तर्निरीक्षणात्मक मनोविज्ञान तथा एंजिल के प्रकार्यवाद को अस्वीकृत किया जाता था, वे हिचनर के अन्तर्निरीक्षणात्मक कसौटी को अस्वीकृत कर दिये, तथा एंजिल के प्रकार्यवाद के

Ajanta PRODUCTS Oxford
Scanned with CamScanner

विरोधी आवाज बुलन्द किये, क्योंकि यह प्रकार्यवाद मन अन्तर्निरीक्षणवादी अवधारणा को स्वीकार किया गया था। 1919 में वाटसन की आंतरिक स्थिति पर बल दिया जिसमें मन या चेतना के अस्तित्व को स्वीकार नहीं गया। यथार्थ यही कारण है कि वाटसन के व्यवहारवाद को मन रहित मनोविज्ञान (mindless psychology) कहा गया है।

यदि प्राथमिक संप्रत्यय (Primary system) के रूप में वाटसन के व्यवहारवाद की प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त निम्नांकित शीर्षक के अन्तर्गत किया जा सकता है।

(1) मनोविज्ञान की परिभाषा - (Definition of Psychology) वाटसन के लिए मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक शाखा है। जो मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। व्यवहार की कुछ नहीं विद्यमान है। जिसमें - शारीरिक अभिव्यक्ति पर आधारित है। अतः मानसिक दशा कुछ कहना या बोलना भी व्यवहार में ही सम्मिलित किया गया है। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (subject-matter) न चेतना (consciousness) है। न मानसिक क्रिया (mental function) और न ही किसी तरह की मनोदैहिक प्रक्रियाएँ है।

अगर हम वाटसन के व्यवहारवाद पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होगा कि वाटसन का संप्रत्यय उद्दीपक-अनुक्रिया मनोविज्ञान है। उद्दीपक के लगातार परिवर्तन के किसी वस्तु के या शारीरिक अंगों में परिवर्तन हो जाता है। उद्दीपक सरल या जटिल कुछ भी हो सकता है। जटिल उद्दीपक वाले ऐसे उद्दीपक परिस्थिति का निर्माण होता है। जिन्हें लघु इकाइयों में विश्लेषित किया जा सके, अनुक्रिया के अन्तर्गत वह सभी क्रियाएँ हैं जो, जिन्हें प्राप्त करता है। अनुक्रिया अर्जित भी हो सकती है। या अनार्जित भी नहीं स्पष्ट भी हो सकती है। या छिपी हुई भी बालचीत करना, टहलना नहीं सोचना अर्जित स्पष्ट अनुक्रिया के उदाहरण हैं। चिन्तन तथा प्रत्यक्षण, अस्पष्ट अर्जित अनुक्रिया के उदाहरण हैं। इस स्थापना के संदर्भ में -

आँख महत्वपूर्ण, रोना, सांस लेना, आदि स्पष्ट अनुकूलित समुच्चय, पाचन क्रिया, हृदय की धड़कन, अस्पष्ट अनुकूलित अनुक्रियाएँ के उदाहरण है। वाटसन के व्यवहारवाद के दो विशिष्ट उद्देश्य है। उद्दीपक के बारे में जानकर अनुक्रिया के बारे में पूर्वकथन करना तथा अनुक्रिया के बारे में जानकर उद्दीपक के बारे में पूर्वकथन करना, तथा अनुक्रिया (response) के बारे में जानकर उद्दीपक के बारे में पूर्वकथन करना।

(ii) मनोविज्ञान की विधियाँ (methods of psychology) वाटसन, मनोविज्ञान की वैज्ञानिक विधि के रूप में अन्तर्निरीक्षण को अस्वीकृत कर दिया था, चूँकि मनोविज्ञान व्यवहार का वस्तुनिष्ठ विज्ञान है। अतः उसकी विधियाँ निश्चित रूप से अनुभाविक होंगी, वाटसन द्वारा मनोविज्ञान की निम्नलिखित चार विधियों की पहचान की गयी है।

(i) प्रयोग एवं प्रेक्षण :- वाटसन का प्रयोगात्मक आधार बड़ा ही मजबूत तथा पूर्व नियोजित था, उसे प्रयोग कर्ता के रूप में वे प्रयोगात्मक विधि को महत्वपूर्ण बतलाते, परन्तु प्रयोगशाला के बाहर के अध्ययनों के लिए वे उद्दीपक - अनुक्रिया सम्बन्ध के प्रेक्षणों को भी महत्वपूर्ण बतलाते, उनका मत था कि वैज्ञानिक प्रेक्षण उपकरण के बिना भी सम्भव है।

(ii) अनुबंधित प्रतिवर्ती प्रविधि - वाटसन ने अनुबंधित प्रतिवर्ती प्रविधि को भी महत्वपूर्ण बतलाया जिसे पावलव तथा बेखटेरेव ने शोधों के लिए थे, वे अनुबंधन के व्यवहार के विश्लेषण करने की एक वैज्ञानिक विधि के रूप में स्वीकार किया, इस विधि के दो स्पष्ट उद्देश्य थे, पहला अनुबंधन द्वारा उन प्रक्रियाओं की व्याख्या सम्भव है। जिसके सहारे अधिगम निर्मित होता है तथा फिर वह छोटे-छोटे प्रकारों में बाँटे जाते है। दूसरा अनुबंधन द्वारा उन समस्याओं का भी व्याख्या सम्भव है। जो काफी काल्पनिक होते है। तथा जो अन्तर्निरीक्षण द्वारा व्याख्या किये भी सीधी सीमा में होते है। जैसे- संवेदन, परन्तु व्यवहार में अनुबंधित प्रतिवर्ती मन प्रकार उद्देश्यों के भाव - प्रतिभाव युक्त

पूरी करने में सफल नहीं रही क्योंकि इसमें कुछ सामान्य आन्तरिक कार्यविधि ही संकेत अधिकांश है।

(iii) परीक्षण-कार्य विधि – वाटसन ने मनोवैज्ञानिक परीक्षण कार्य को एक महत्वपूर्ण विधि माना है। जैसे कोई व्यवहारवादी विधि मनोवैज्ञानिक परीक्षण की उपयोग करते हैं तो वे उसे किसी वस्तुनिष्ठ परिस्थिति के प्रति एक गत अनुक्रियाओं या व्यवहारों के मापन के रूप में उसकी उपयोग करते हैं। वाटसन ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण मानसिक परीक्षण नहीं है। क्योंकि वह किसी विशिष्ट मानसिक का मापन मन के पहलू के रूप में नहीं करती है।

(iv) आत्मिक रिपोर्ट की विधि – वाटसन ने मानव प्रयोगों के लिए आत्मिक रिपोर्ट के अनुसंधान को एक पूर्ण विधि के रूप में अपनाया, इस विधि में प्रयोज्य – अपने हालत या निष्पादन के बारे में एक रिपोर्ट या प्रतिवेदन देते हैं। व्यवहारवादी इस रिपोर्ट या प्रतिवेदन को मात्र स्पष्ट अनुक्रियाओं के रूप समझकर उनका अध्ययन करते हैं। व्यवहारवादियों द्वारा इस – क्या मन प्रयोगों के मानसिक अवस्था पर किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं समझा जाता है। जैसे – यदि कोई व्यक्ति यह कहता है मैं भूखा हूँ – तो व्यवहारवादी इस मानसिक अवस्था पर का गत हस्तक्षेप न मानकर उसकी प्रतिक्रिया तंत्र को एक विशेष पहलू मानते हैं। इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि वाटसन आत्मिक रिपोर्ट या आत्मिक प्रतिवेदन – को उद्दीपन के प्रति किया गया एक पेशीय अनुक्रिया मानते हैं।

Dr. Premodiyanandan Sahu,
Date – 24/08/2020
Dept. – Psychology